राष्ट्रीय आय की परिभाषाएँ
(DEFINITIONS OF NATIONAL INCOME)

विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने राष्ट्रीय आय की अलग-अलग परिभाषाएँ दी हैं। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से इन्हें हम मुख्यतया दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं :

(I) **नव-प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों की परिभाषाएँ** (Definitions by Neo-classical Economists)—इसके अन्तर्गत प्रो. मार्शल, पीगू एवं फिशर की परिभाषाएँ सम्मिलित हैं ।

(II) **आधुनिक परिभाषाएँ** (Modern Definitions)—इसके अन्तर्गत प्रो. साइमन कुजनेट्स, सैम्युअलसन, बाउले एवं राबर्ट्सन, पाल स्टुडेन्स की परिभाषाएँ आती हैं।

(I) नव-प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों की परिभाषाएँ (Definitions by Neo-classical Economists)

नव-प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री मार्शल, पीगू, फिशर आदि ने राष्ट्रीय आय की अलग-अलग परिभाषाएँ इस प्रकार दी हैं :

(1) **मार्शल की परिभाषा** (Marshall's Definition)—**प्रो. मार्शल** के अनुसार, "किसी देश का श्रम व पूँजी उस देश के प्राकृतिक साधनों पर कार्य करते हुए प्रति वर्ष भौतिक तथा अभौतिक वस्तुओं एवं सभी प्रकार की सेवाओं का एक विशुद्ध योग उत्पन्न करते हैं। यही किसी देश की वास्तविक विशुद्ध वार्षिक आय या आगम अथवा राष्ट्रीय लाभांश है।"[1]

परिभाषा की विशेषताएँ (Characteristics of Definition)—मार्शल की परिभाषा की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—(i) राष्ट्रीय आय की गणना साधारणतः वार्षिक आधार पर की जाती है। (ii) कुल उत्पादन में से मशीनों की टूट-फूट एवं घिसावट घटा देनी चाहिए। (iii) इसमें विदेशी विनियोगों से प्राप्त विशुद्ध आय जोड़ देनी चाहिए। (iv) इसमें उन सेवाओं को सम्मिलित नहीं करना चाहिए जो व्यक्ति अपने तथा अपने परिवार के सदस्यों के लिए या मित्रों के लिए निःशुल्क करता है। इस प्रकार व्यक्तिगत सम्पत्ति तथा सार्वजनिक सम्पत्ति से प्राप्त लाभों को भी राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं करना चाहिए।

Scanned with CamScanner

संक्षेप में :

शुद्ध राष्ट्रीय आय (Net National Income) = (वस्तुओं तथा सेवाओं का वार्षिक उत्पादन + विदेशी विनियोगों से प्राप्त शुद्ध आय – कच्ची सामग्री की लागत – ह्रास)।

मार्शल की परिभाषा की आलोचनाएँ (Criticisms of Marshall's Definition)—यद्यपि मार्शल की परिभाषा सरल तथा व्यापक है फिर भी इसमें कुछ व्यावहारिक कठिनाइयाँ हैं जो निम्न प्रकार हैं :

(i) **सही अनुमान की कठिनाई** (Problem of Correct Estimation)—किसी वर्ष में उत्पादित उपभोग वस्तुओं एवं सेवाओं तथा उनकी असंख्य किस्मों की मात्रा का ठीक-ठीक अनुमान लगाना अत्यन्त कठिन है।

(ii) **वस्तुएँ जिनका बाजार में विनिमय नहीं होता** (Commodities which are not Exchanged)—बहुत-सी वस्तुएँ ऐसी होती हैं जिनका विनिमय बाजार में नहीं होता। उदाहरणार्थ, कृषि फसल का एक भाग उत्पादक अपने परिवार के प्रयोग के लिए रख लेता है, ऐसी वस्तुओं का मौद्रिक मूल्य ज्ञात नहीं किया जा सकता है, अतः राष्ट्रीय आय की सही गणना सम्भव नहीं है।

(iii) **दोहरी गणना का भय** (Fear of Double Counting)—**मार्शल** की परिभाषा के अनुसार, राष्ट्रीय आय की गणना करने पर दोहरी गणना (Double Counting) की सम्भावना रहती है। उदाहरणार्थ, कृषि उत्पादन में कपास के मूल्य को भी शामिल किया जा सकता है तथा औद्योगिक उत्पादन में उसी कपास से बने कपड़े के उत्पादन मूल्य को भी शामिल किया जा सकता है।

(2) **पीगू की परिभाषा** (Pigou's Definition)—पीगू ने राष्ट्रीय आय की गणना में केवल उन्हीं वस्तुओं व सेवाओं का समावेश किया है जिनको मुद्रा के मापदण्ड द्वारा मापा जा सके। इस प्रकार पीगू की परिभाषा मार्शल की परिभाषा से भिन्न है। **पीगू** (Pigou) के अनुसार, "किसी समुदाय की राष्ट्रीय आय वस्तुगत आय (Objective Income) का वह भाग है जिसमें विदेशों से प्राप्त आय सम्मिलित होती है जिसको मुद्रा द्वारा मापा जा सकता है।"[1]

संक्षेप में :

राष्ट्रीय आय (NI) = मौद्रिक आय + विदेशों में विनियोगों से आय

पीगू की परिभाषा की विशेषताएँ (Characteristics of Pigou's Definition)—पीगू ने राष्ट्रीय आय की परिभाषा में दो बातों पर विशेष महत्व दिया है :

(i) **विदेशों में किये गये विनियोगों से प्राप्त आय** (Income from Foreign Investments)—देश के उत्पादन के अतिरिक्त देश के नागरिकों द्वारा विदेशों में किये गये विनियोगों से प्राप्त आय का समावेश भी राष्ट्रीय आय में किया जाना चाहिए।

(ii) **मुद्रा का मापदण्ड** (Measuring Rod of Money)—केवल उन्हीं वस्तुओं व सेवाओं का समावेश राष्ट्रीय आय में किया जाना चाहिए जिन्हें मुद्रा के मापदण्ड द्वारा मापा जा सके।

पीगू की परिभाषा की आलोचनाएँ (Criticisms of Pigou's Definition)—प्रो. पीगू की परिभाषा सरल एवं कार्य योग्य होते हुए भी त्रुटिरहित नहीं कही जा सकती। इनकी परिभाषा के दोष निम्नलिखित हैं :

(i) **संकीर्ण तथा विरोधाभासयुक्त** (Narrow and Paradoxical)—प्रो. पीगू के विचार बहुत ही संकीर्ण तथा विरोधाभास से परिपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति अपनी नौकरानी को उसकी सेवाओं के लिए 100 रुपये प्रति माह चुकाता है तो उस नौकरानी की सेवाएँ राष्ट्रीय आय में सम्मिलित की जायेंगी क्योंकि उसकी सेवाओं की कीमत मुद्रा के रूप में व्यय की गई है। अब यदि व्यक्ति अपनी नौकरानी से विवाह कर लेता है तो उसकी सेवाएँ राष्ट्रीय आय में सम्मिलित नहीं की जायेंगी क्योंकि अब उस नौकरानी को अपनी सेवाओं के बदले में मुद्रा के रूप में कोई पुरस्कार नहीं मिलता है। स्पष्ट है कि नौकरानी की सेवाएँ तो वही हैं लेकिन कभी तो वह राष्ट्रीय आय में सम्मिलत होती हैं और कभी नहीं।

1 "National Income is that

Scanned with CamScanner

(ii) **केवल मौद्रिक अर्थव्यवस्था में ही लागू** (Applicable to only Monetary Economy)—यह परिभाषा केवल मौद्रिक अर्थव्यवस्था में ही लागू हो सकती है और जिन देशों में अधिकांश वस्तुओं एवं सेवाओं का विनिमय नहीं किया जाता वरन् प्रत्यक्ष रूप से अदल-बदल किया जाता है, वहाँ इस परिभाषा का कोई महत्व नहीं है।

फिशर के अनुसार, "राष्ट्रीय लाभांश या आय में केवल वे ही सेवाएँ सम्मिलित की जाती हैं जो अन्तिम उपभोक्ता को प्राप्त होती हैं चाहे ये वस्तुएँ भौतिक अथवा मानवीय वातावरण से प्राप्त हुई हों।"[1] **फिशर** ने उपभोग के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए आगे लिखा है कि "इस प्रकार एक पियानो या ओवरकोट जो कि मेरे लिए इस वर्ष बनाया गया है, वह इस वर्ष की आय नहीं है बल्कि वह तो पूँजी में वृद्धि है। केवल वे ही सेवाएँ, जो कि इन वस्तुओं के प्रयोग से मुझे मिलेंगी, वार्षिक आय है।"

परिभाषा का स्पष्टीकरण (Explanation of Definition)—प्रो. फिशर द्वारा प्रस्तुत की गयी परिभाषा एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट की जा सकती है। मान लीजिए कि सन् 2002 में 10,000 रुपये की कीमत की एक मोटर तैयार की जाती है। अब मार्शल तथा पीगू के अनुसार सम्पूर्ण 10,000 रुपये को सन् 2002 की राष्ट्रीय आय में सम्मिलित किया जायेगा लेकिन प्रोफेसर फिशर समूचे 10,000 रुपये को सन् 2002 की राष्ट्रीय आय में सम्मिलित नहीं करते। उनके अनुसार सन् 2002 की राष्ट्रीय आय में उस वर्ष में किये गये मोटर के उपयोग के मूल्य को ही सम्मिलित किया जाना चाहिए। मान लीजिए कि मोटर का जीवनकाल 10 वर्ष है। अतः सन् 2002 की राष्ट्रीय आय में फिशर के अनुसार केवल 1,000 रुपये ही जोड़ने चाहिए, 10,000 रुपये नहीं।

परिभाषा की विशेषताएँ (Characteristics of Definition)—(1) फिशर ने 'उपभोग' के आधार पर राष्ट्रीय आय की परिभाषा प्रस्तुत की है, जबकि मार्शल तथा पीगू ने उत्पादन को राष्ट्रीय आय की गणना का आधार बनाया है। (2) फिशर की परिभाषा **आर्थिक कल्याण** के अधिक निकट है क्योंकि उपभोग का कल्याण से प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। मात्र उत्पादन से ही कल्याण में वृद्धि नहीं होती। (3) फिशर की परिभाषा अधिक वैज्ञानिक एवं तर्कपूर्ण है।

फिशर की परिभाषा की आलोचनाएँ (Criticisms)—मार्शल की अपेक्षा फिशर की परिभाषा अधिक वैज्ञानिक प्रतीत होती है क्योंकि फिशर के अनुसार किसी वर्ष में वस्तुओं के उपभोग मूल्य को ही सम्मिलित किया जाता है लेकिन व्यावहारिक दृष्टिकोण से इसमें भी बहुत-सी त्रुटियाँ हैं :

(i) **उपभोग का विस्तृत क्षेत्र** (Wider Scope for Consumption)—किसी निश्चित अवधि में एक समाज के कुल उपभोग की मात्रा को ज्ञात करना अधिक कठिन है क्योंकि शुद्ध उत्पादन की अपेक्षा शुद्ध उपभोग का क्षेत्र अधिक होता है। किसी एक व्यक्ति द्वारा उत्पादित की गई वस्तुएँ समाज के हजारों व्यक्तियों द्वारा उपभोग की जाती हैं।

(ii) **टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुएँ** (Durable Consumer's Goods)—टिकाऊ वस्तुओं (कम से कम एक वर्ष से अधिक चलने वाली वस्तुओं) के जीवनकाल का ठीक-ठीक अनुमान लगाना कठिन होता है क्योंकि किसी वस्तु का जीवन उसके प्रयोग करने के तरीके एवं बरती गई सावधानी पर निर्भर होता है।

(iii) **वस्तुओं का हस्तान्तरण** (Transfer of Goods)—वस्तु का हस्तान्तरण हो सकता है और टिकाऊ वस्तु अपने प्रारम्भिक स्वामी से जिसने कि इसे पहले खरीदा था, दूसरे तथा तीसरे के हाथ जा सकती है। इससे भी उस वस्तु के निर्माण की तारीख का पता लगाना कठिन हो सकता है।

कौन-सी परिभाषा सर्वश्रेष्ठ है ? (Which is Suitable Definition ?)—यों तो तीनों ही परिभाषाओं के अपने-अपने गुण-दोष हैं, फिर भी यदि इनमें से किसी परिभाषा को सर्वश्रेष्ठ बताना हो तो इसका उत्तर इस उद्देश्य की पृष्ठभूमि में दिया जा सकता है कि किस उद्देश्य से राष्ट्रीय लाभांश का प्रयोग किया जाए। यदि राष्ट्रीय आय की गणना करते समय हमारा उद्देश्य कुछ वर्षों के लिए आर्थिक कल्याण को मापना हो (लोगों के जीवन-स्तर के विषय में जानकारी प्राप्त करना हो) तो इस कार्य के लिए निःसन्देह **तीनों में से फिशर की परिभाषा श्रेष्ठ है** क्योंकि फिशर के अनुसार राष्ट्रीय आय में केवल उन्हीं वस्तुओं और सेवाओं का समावेश होता है जोकि किसी वर्ष-विशेष में उस देश के निवासी उपभोग करते हैं। **फिशर** की परिभाषा उस दशा में भी अधिक उपयोगी प्रमाणित होती है

Scanned with CamScanner

जबकि हमें यह ज्ञात करना हो कि एक देश के युद्ध के लिए कुछ वर्षों तक कितनी सामग्री मिल सकती है क्योंकि इसके लिए यह जानना आवश्यक है कि कितनी सामग्री बचायी जा सकती है और कितनी का उपभोग होता है ?

परन्तु जब हमारा उद्देश्य **शान्तिकाल** की स्थिति में यह ज्ञात करना हो कि कौन-से कारण आर्थिक कल्याण को प्रभावित कर रहे हैं तो **पीगू तथा मार्शल की परिभाषाएँ अधिक उपयुक्त** होंगी, फिशर की नहीं क्योंकि ऐसी दशा में आर्थिक कारण तथा आर्थिक कल्याण एक-दूसरे के कुल उपभोग द्वारा सम्बन्धित होते हैं, न कि तत्कालीन उपभोग द्वारा। उदाहरणार्थ, पूँजी की वृद्धि से भविष्य में अधिक उपभोग बढ़ाने की सम्भावना रहती है।

(II) **आधुनिक परिभाषाएँ** (Modern Definitions)

कई आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने राष्ट्रीय आय की परिभाषाएँ निम्न प्रकार से दी हैं :

(1) **राष्ट्रीय आय समिति** (National Income Committee)—**राष्ट्रीय आय समिति** ने अपनी पहली रिपोर्ट में कहा है कि "राष्ट्रीय आय के अनुमान से बिना दोहरी गिनती के एक दी हुई अवधि में उत्पन्न की जाने वाली वस्तुओं व सेवाओं की मात्रा की माप की जा सकती है।"[1]

आलोचना (Criticism)—यह परिभाषा अत्यन्त व्यापक है जिससे व्यावहारिक दृष्टि से राष्ट्रीय आय को मापना अत्यन्त कठिन है।

(2) **प्रो. साइमन कुजनेट्स** (Simon Kuznets)—"राष्ट्रीय आय वस्तुओं व सेवाओं की वह विशुद्ध उत्पत्ति है जो एक वर्ष की अवधि में देश की उत्पादन प्रणाली में अन्तिम उपभोक्ताओं के हाथों में पहुँचती है।"[2]

आलोचना (Criticism)—यह परिभाषा भी अव्यावहारिक है क्योंकि यह मालूम करना अत्यन्त कठिन कि किसी देश के विशुद्ध उत्पादन का कितना भाग स्टॉक में स्थानान्तरित किया गया और कितने भाग का उपभो किया गया ?

(3) **सैम्युअलसन** (Samuleson)—"यह (राष्ट्रीय आय) एक नाम है जो कि हम एक अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं की वार्षिक गति के मौद्रिक माप के लिए देते हैं।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि **"किसी देश की राष्ट्रीय आय साधारणतः वहाँ एक वर्ष में उत्पादित समस्त वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य का योग होती है जिसमें से वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन हेतु प्रयोग की गई मशीनों एवं पूँजी की घिसावट को घटा दिया जाता है तथा विदेशों से प्राप्त विशुद्ध आय को जोड़ दिया जाता है।"**

इस परिभाषा से स्पष्ट है कि :

(i) राष्ट्रीय आय किसी देश की एक वर्ष या निश्चित समयावधि की आय है। (ii) यह वस्तुओं एवं सेवाओं दोनों के द्राव्यिक मूल्य का योग है। (iii) इसमें से पूँजी की घिसावट (D) को घटा दिया जाता है। (iv) इसमें विदेशों से प्राप्त विशुद्ध आय (निर्यात-आयात) को जोड़ दिया जाता है।

इस प्रकार एक देश की राष्ट्रीय आय में कुल उपभोग व्यय (C), कुल विनियोग व्यय (I), सरकारी व्य (G) तथा विदेशों से प्राप्त विशुद्ध आय (निर्यातों एवं आयातों के मूल्यों के अन्तर); अर्थात् (X − M) को जो दिया जाता है तथा मशीनों की घिसावट व्यय को घटाया जाता है। सूत्र रूप में :

राष्ट्रीय आय = उपयोग व्यय + विनियोग व्यय + सरकारी व्यय—मशीनों का घिसावट व्यय + निर्यात एवं आयात के मूल्यों का अन्तर

$$\text{National Income} = C + I + G - D + (X - M)$$

Scanned with CamScanner